Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
(UGC Approved Journal No 48178, 48818)
ISSN 2278-5655

मेरा स्वप्निल विद्यालय : आज की आवश्यकता

संतोष कुमार खरे
सहाय्यक अध्यापक
जुनिअर हाईस्कूल बराह

मैंने सपने में अपने विद्यालय को देखा कि मेरा विद्यालय मूलभूत सुविधाओं से परिपूर्ण है, बच्चे संस्कारवान हैं, छात्रों का शैक्षणिक स्तर उत्कृष्ट है, विद्यालय भौतिक रूप से सुन्दर व आकर्षक है, सरकार द्वारा दी जाने वाली सभी योजनाओं का छात्रों को लाभ मिल रहा है, बच्चे प्रत्येक स्तर पर अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं, बच्चों में हमेशा प्रगति करने एवं देश के प्रति कुछ कर गुजरने का जज्बा है, आपस में एक–दूसरे के प्रति प्रेम, आदर व सहयोग की भावना है, शिक्षक–छात्र–छात्राएँ–अभिभावक–उच्च अधिकारीगण–ग्राम प्रधान– सफाई कर्मचारी एवं सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों में उचित तालमेल है।

मैंने सपने में देखा कि बच्चे विद्यालयी शिक्षा का केन्द्र होते हैं वहीं बच्चों में ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक अध्यापक की होती है। स्कूली शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए हम लोगों ने स्कूल के बारे में अपनी परम्परागत राय को बदल दिया है। सरकार ने हमारे स्कूलों को कार्यालय न बनाते हुए आँकड़े देने की बजाए शिक्षकों को बच्चों के साथ समय बिताने पर जोर दिया है। बच्चे अपने शिक्षकों से सतत् जुड़े रहना चाहते हैं, विशेषकर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर। अतः सरकार ने हमारे स्कूल को कार्यालीन कामकाज से मुक्त कर प्रभावी शिक्षण संस्थान बना दिया है। हमारे स्कूल में भारी वित्तीय निवेश देकर जरूरी बुनियादी आधुनिक मूलभूत सुविधाएँ प्रदान की है तथा विद्यालय मे सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग द्वारा पठन–पाठन की गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार किया जा रहा है। शैक्षणिक सुधार में शिक्षकों की भूमिका सबसे अहम है। हमारे विद्यालय में शिक्षकों और छात्रों में एक आदर्श अनुपात है। शिक्षकों को डायट् परिसर में योग्य प्रशिक्षकों द्वारा बेहतर प्रशिक्षण दिया जा रहा है और प्रशिक्षण

प्राप्त शिक्षक की विद्यालय में लगातार मॉनीटरिंग की जा रही है कि वह प्रशिक्षण में प्राप्त गुरों को अपने विद्यालय में बच्चों की शैक्षणिक स्थिति को सुधारने में प्रयोग कर रहे हैं या नहीं। समय–समय पर योग्य ए.बी.आर.सी. द्वारा विद्यालय में शैक्षणिक भ्रमण करके शिक्षकों व बच्चों का शैक्षणिक स्तर उच्च करने का प्रयास किया जा रहा है। हमारे विद्यालय के शिक्षकों को विभागीय कार्यालय में उचित सम्मान दिया जा रहा है एवं उनकी विभागीय समस्याओं को प्राथमिकता से निपटाया जा रहा है। अधिकारियों द्वारा शिक्षकों की विभागीय समस्याओं को प्राथमिकता से निपटाने का असर सीधा विद्यालयों पर पड़ता है। ऐसे में शिक्षक का मन व उसकी पूरी ताकत विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक स्तर उच्च करने में लग जाती है।

सरकार प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए अभिभावकों को जागरूक करने का प्रयास कर रही है ताकि वह अपने बच्चो का समय से नामांकन कराये, प्रतिदिन समय से अपने बच्चों को विद्यालय भेजे एवं विद्यालय में क्या पढ़ाया गया है, का विशिष्ट ध्यान रखें। सरकार शिक्षा–क्षेत्र में अनेक सरकारी योजनाओं के बार में अभिभावकों को जागरूक करने का प्रयास कर रही है। अधिकारियों द्वारा विद्यालय में S.M.C., P.T.A., M.T.A. मीटिंग की मॉनीटरिंग यह देखने के लिए की जा रही है कि कहीं यह मीटिंग महज कागजों में खाना–पूर्ति तक तो सीमित नहीं है।

अधिकारियों का विद्यालय में निरीक्षण का सुधारात्मक उद्देश्य है। बाल–श्रम अधिकारों का कड़ाई से पालन किया जा रहा है ताकि विद्यालय में नामांकित कोई भी छात्र किसी दुकान पर काम करता हुआ न मिले। सरकार द्वारा संचालित M.D.M. व्यवस्था बच्चों के नामांकन को बढ़ाने व विद्यालय में बच्चों के स्थायित्व को प्रदान करने के उद्देश्य से बनाई गई थी। लेकिन कुछ लालची अध्यापकों या ग्राम प्रधानों द्वारा इस योजना का निजी स्वार्थ के लिए फायदा उठाया जा रहा है। जमीनी स्तर पर सरकार द्वारा बच्चों का M.D.M. की कन्वर्जन कास्ट का पूर्ण लाभ नहीं मिल पर रहा है विद्यालय में बुनियादी सुविधाएँ न होने के कारण M.D.M. के बनने में बहुत समय बर्बाद हो जाता है जिससे बच्चों की पढ़ाई में बहुत ही व्यवधान उत्पन्न होता है। मैंने सपने में देखा कि उ0

प्र0 के मुख्यमंत्री श्री आदित्य नाथ 'योगी' जी कह रहे हैं ***''क्यों न बच्चों को टिफिन बाँट दिए जाए औरM.D.M. की कन्वर्जन कास्ट उनकी माह की दैनिक उपस्थिति के आधार पर उनके खाते में भेज दी जाऐ''***। हमारे मुख्यमंत्री जी का विचार स्वागत योग्य है। मैं सपने में मन ही मन बहुत खुश हो रहा हूँ कि अगर ऐसा हो जाता है तो विद्यालय में बच्चों की शिक्षा में एक बहुत बड़ा व्यवधान खत्म हो जाएगा। तभी अचानक मेरी नींद खुलती है और मेरा स्वप्न टूट जाता है। उसी वक्त मैंने अपने मन में ठान लिया कि मैं अपने विद्यालय को अपने स्वप्न से भी अच्छा बना दूगाँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा के सुधार के लिए जब तक कोई बड़ा कदम नहीं उठाया जाता, तब तक हालात नहीं बदलेंगे। निम्न मध्य वर्ग और आर्थिक रूप से सामान्य लोगों के बच्चों के लिए सरकारी स्कूल ही बचते हैं। देश की बड़ी आबादी इन सरकारी स्कूलों के ही सहारे है फिर वे चाहे कैसे भी हों। इन स्कूलों में योग्य अध्यापक तो हैं लेकिन वह अपनी विभागीय समस्याओं से परेशान है और न ही मूलभूत सुविधाएँ हैं। हमने अपने विद्यालय में अपने समस्त स्टॉफ के साथ विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के सकारात्मक अभियान का प्रण लिया और वर्तमान में सरकार द्वारा दी जा रही मूलभूत सुविधाओं के साथ ही अपने विद्यालय में प्रत्येक विषय से सम्बन्धित पाठ का टी0एल0एम0 बना कर बच्चों के शैक्षणिक स्तर को ऊँचा करने का प्रयास किया और जैसा विद्यालय अपने स्वप्न में मैंने देखा था। मेरे छोटे से प्रयास से मैं 70 प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त कर सका और आज मेरे सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं का शैक्षणिक स्तर व भौतिक परिवेश किसी अन्य प्राइवेट विद्यालय से कम नहीं है।